International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628, Print ISSN: 2664-861X
Received: 01-11-2022, Accepted: 02-12-2022, Published: 17-12-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 186-188

बीकानेर की रंगमंचीय परंपरा और गंगा थियेटर

अनुजा कटारा
शोधार्थी, सहायक आचार्य, इतिहास, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान भारत

सारांश
रंगमंच लोकानुरंजन के साधन के साथ सामाजिक चेतना को जागृत करने और मानवीय संवेदनाओं को आलोड़ित करने का सशक्त जरिया है। राजस्थान में भी लोकनाट्य विधाओं उदाहरणतः भवई, गवरी, तमाशा, तुर्रा कलंगी, रामलीला, रासलीला, ख्याल इत्यादि की समृद्ध मंचन परंपरा रही है। ऐसी ही परंपरा राजस्थान के बीकानेर क्षेत्र में भी फली फूली। आरंभ में यहाँ लोक नाटकों के मंचन की परंपरा स्वतः स्फूर्त थी। यहां की रंगमंचीय परंपरा को समृद्ध बनाने में स्थानीय कला संस्थाओं और शिक्षण संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पारसी थिएटर के आगमन ने इस परंपरा को और समृद्ध बनाया। बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह जी ने आम जन के सांस्कृतिक उत्थान और आमोद प्रमोद के लिए 20वीं सदी के चौथे दशक में बीकानेर के गंगा निवास पब्लिक गार्डन में गंगा थिएटर की सुंदर इमारत का निर्माण करवाया। उस समय उपलब्ध आधुनिकतम टेक्नोलॉजी से सुसज्जित यह मंच बीकानेर के रंगमंच को लोकप्रिय बनाने की दिशा में एक सराहनीय पहल थी। रंग कर्मियों के लिए यह अत्यंत उत्साह जनक था। बीकानेर के कलावंतो ने यहां अनेक नाटकों की प्रस्तुतियां दी जिन्हें बड़ी संख्या में शामिल हो दर्शकों ने सराहा। इन नाटकों के प्रदर्शन की सफलता ने यह साबित कर दिया कि यदि उपयुक्त मंच उपलब्ध हो तो नाटक के दर्शक हमेशा से रहे हैं। हालांकि आगे चलकर यहां सरकार ने व्यावसायिक फिल्मों के प्रदर्शन को प्रारंभ कर दिया, जिसकी वजह से रंगमंचीय प्रस्तुतियां कम होने लगी, क्योंकि फिल्मों के प्रदर्शन के बीच नाटकों की प्रस्तुतियों के लिए समय निकालना मुश्किल होने लगा।
प्रस्तुत पत्र के माध्यम से बीकानेर की प्रारंभिक रंगमंच की परंपरा का अध्ययन करने के साथ ही शासकीय प्रयासों के महत्व को भी समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही उन संभावना को तलाशने का भी प्रयास है जिससे एक बार फिर से गंगा थियेटर को पुनर्जीवित कर बीकानेर की रंगमंचीय परंपरा को और समृद्ध बनाने का प्रयास कारगर हो सके।

मूल शब्द: नाटक, लोकनाट्य, रंगमंच, बीकानेर, पारसी रंगमंच, गंगा थियेटर, महाराजा गंगा सिंह

राव बीका ने 1488 ईस्वी में बीकानेर नगर की स्थापना की।[1] राजस्थान के उत्तर पश्चिम में स्थित बालू के टीलों से घिरा बीकानेर स्वतंत्रता प्राप्ति तक राजशाही में पनपा। 19वीं सदी में रेलवे के आगमन से सुख सुविधाओं की उपलब्धता बढ़ी और यहां का सामाजिक–सांस्कृतिक विकास गतिमान हुआ। शिक्षा और आवागमन की सुलभता से सांस्कृतिक पुनरुत्थान प्रारंभ हुआ। रंगमंच के क्षेत्र में लोग अभी तक लोकनाट्य के प्रदर्शन तक ही सीमित थे। यहा मुख्यतः रम्मत, ख्याल व नौटंकी इत्यादि लोकनाट्यों की प्रस्तुतियां होती थी। सांस्कृतिक पुनरुत्थान के दौर में स्थानीय कलाकारों का परिचय पारसी थिएटर से हुआ।[2] अब स्थानीय रंगकर्म में पारसी थिएटर शामिल होने लगा। वर्ष 1886 के आसपास बीकानेर में रंग कर्म के प्रति रुझान दृष्टतव्य होता है।[3] राव बीका से राव सरदार सिंह के काल तक यहां सांस्कृतिक गतिविधियों में रम्मतों और ख्याल, लावणी का आयोजन किया जाता था। आयोजन मुख्यतः पुष्करणा समाज के चौक–मोहल्लों में किया जाता था। इनमें हेडाऊ राणी की रम्मत अत्यंत लोकप्रिय हुई जिसे देखने के लिए भारी संख्या में भीड़ उमड़ती थी। आचार्यों के चौक समेत बीकानेर के लगभग सभी मोहल्लों में रम्मतों का आयोजन होता था।
आचार्यों के चौक में प्रदर्शित होने वाली अमर सिंह की रम्मत भी खूब लोकप्रिय हुई।[4] इन रम्मतों में कथानक ऐतिहासिक नायकों के गुणगान व धार्मिक कथ्यों से जुड़ा होता था। रम्मतों के साथ–साथ कहीं–कहीं लावणी व नौटंकी का आयोजन भी किया जाता था। इनमें श्री जीतमल सेवक की नौटंकीए चौबालों की रम्मत और पूरण भगत की रम्मत दर्शकों में खूब तालियां बटोरती थी।[3] इन नाटकों में पुष्करणा रंगकर्मी ही मुख्य कलाकार होते थे। स्त्री पात्रों की भूमिका भी पुरुष कलाकार ही अभिनीत करते थे। प्रकाशन और फोटोग्राफी के विकसित न होने के चलते इन लोकनाट्यों की समीक्षाओं और छाया चित्रों का अभाव हमें नजर आता है। सन 1886 में महाराज डूंगर सिंह जी के समय में रेल कर्मचारियों के सांस्कृतिक उत्थान के लिए जोधपुर बीकानेर थिएट्रिकल कंपनी और 1905 ई. में स्थापित पुष्करणा समाज के रंग कलाकारों की व्यावसायिक मंडली ने पारसी रंगमंच को बीकानेर में स्थापित किया। सिल्वर किंग, हेमलेटए गुलरु जरीनाए हरिश्चंद्र, खूबसूरत बला, कनक तारा इत्यादि नाटक पारसी रंगमंच शैली में मंचित किए गए। अब ऐतिहासिक व धार्मिक कथानकों के साथ सामाजिक नाटक भी किए जाने लगे। पारसी थिएटर का उद्गम बीकानेर में संभवतः 1905 ई के आसपास हुआ। यहां आगा हश्र कश्मीरी के उर्दू मिश्रित रंगमंचीय नाटकों की उपलब्धता ने पारसी उर्दू रंगमंच को बल दिया। इस शैली में रामलीला का मंचन भी प्रायः किया जाता था। 1912 ईस्वी में बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह के शासनकाल की रजत जयंती के अवसर पर यहां भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर भारत सरकार के वायसराय, अंग्रेज अधिकारी और अनेक देसी राजा भी उपस्थित थे। उनके सांस्कृतिक मनोरंजन के लिए नृत्य संगीत और लोक नाटिकाओं की प्रस्तुतियां दी गई, जिन्हें देखने के लिए भारी संख्या में हुजूम उमड़ा। सन् 1918 में बीकानेर रंगकर्मियों द्वारा स्थापित पुष्टिकर नाट्य समिति, श्री रामदयाल जी व्यास द्वारा 1919 ईस्वी में स्थापित विजय थियेट्रिकल कंपनी, 1924 ईस्वी में स्थापित रेलवे क्लब, 1941 में गोस्वामी समाज के फूल चंद्र गोस्वामी और आशाराम गोस्वामी ने गौतम कला मंदिर की स्थापना की। इन सभी नाट्य संस्थाओं ने बीकानेर में रंग कर्म को लोकप्रिय बनाने में अहम योगदान दिया। इस समय भक्त सूरदास, वीर अभिमन्यु, श्रवण

कुमार, महाराणा प्रताप, भीष्म पितामह, हरिश्चंद्र, बाबा कातिल, परिवर्तन, सिकंदर, शाहजहां सम्राट चंद्रगुप्त जैसे लोकप्रिय ऐतिहासिक नाटकों का मंचन हुआ। बीकानेर में रंगमंच परंपरा को लोकप्रिय बनाने में तत्कालीन शिक्षण संस्थानों की भी महती भूमिका रही। पुष्टिकर नाट्य समिति ने अपने प्रथम नाटक भक्त सूरदास का मंचन दरबार हाई स्कूल बाद में रामपुरिया कॉलेज के प्रांगण में किया। सन 1939 में डूंगर कॉलेज बीकानेर में शाहजहां नामक नाटक का भव्य पैमाने पर मंजन हुआ। नाट्य मंच सज्जा के लिए सिंहासनए राजसी पोशाकए चांदी की छड़ी व तलवार महाराज के लालगढ़ पैलेस से जुटाए गई श्री अमर दत्त आचार्य ने शाहजहां और श्री गणेश केवलिया ने मुमताज की महल की भूमिका अदा की। यह पहला अवसर था जब बीकानेर राज्य सरकार ने नाट्य मंचन के लिए बड़े पैमाने पर सुविधाएं प्रदान की। रामपुरिया कॉलेज के प्राचार्य और प्रसिद्ध रंगकर्मी एस. के. सरकार ने 1944 ईस्वी में अपने कॉलेज में नाट्य स्पर्धाओं का आयोजन किया जिसमें डूंगर कॉलेज शार्दुल हाई स्कूल में तत्कालीन शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों के दशकों में युवा समाज बड़ी संख्या में उपस्थित रहता था और रंग कला से प्रभावित हो उनमें भी रंग कर्म के प्रति रुचि जागृत होती थी। अभी तक बीकानेर में रंगमंच के विकास में राज्य सरकार का कोई विशेष उल्लेख योगदान नहीं रहा। इसकी लोकप्रियता स्वत स्फूर्त और नगर की शैक्षणिक संस्थानों, विभागीय क्लबों और नाट्य कंपनियों की देन थी। सरकार के विभागीय क्लब रंगमंच से जुड़े की बात छोड़ दी जाए तो बीकानेर में रंगमंच के विकास में राज्य सरकार ने कोई उल्लेखनीय योगदान नहीं दिया हालांकि यह महत्वपूर्ण है कि सरकारी कार्यालय में नियुक्ति के समय शैक्षणिक योग्यता के तहत रंग कला की दक्षता को भी देखा जाता था। कहीं–कहीं तो रंग कर्मियों को नियुक्ति के लिए प्राथमिकता दी जाती थी।[5] इसका तात्पर्य है कि तत्कालीन समाज में रंग कर्म के महत्व को स्वीकार्यता मिलने लगी थी। महाराजा गंगा सिंह जनता के मनोरंजन और आमोद प्रमोद का भी पूरा ध्यान रखते थे। उन्होंने 3 लाख की लागत से बीकानेर के गंगा निवास पब्लिक गार्डन में गंगा सिनेमा थिएटर की सुंदर इमारत बनवाई।

चौथे दशक के पूर्वार्ध में तत्कालीन महाराजा गंगा सिंह जी के सांस्कृतिक नवाचारों के प्रयास में सन 1932 ईस्वी में श्री गंगा थिएटर का निर्माण पूरा हुआ। गंगा थियेटर बहुत ही बेहतरीन इंजीनियरिंग से बना है। इसमें बालकनी के अलावा सभी सीटों के नीचे से हवा आती है क्योंकि नीचे की हिस्से में कूलिंग सिस्टम लगा हुआ था।[6] गंगा थिएटर का निर्माण अपने प्रारंभिक स्वरूप में नाटकों के मंचन के लिए ही किया गया था हालांकि बाद में वहां फिल्मों का प्रदर्शन किया जाने लगा। गंगा थियेटर की खास बात यह है कि इससे होने वाली आय पीबीएम अस्पताल बीकानेर में भर्ती गरीब मरीजों के लिए भेजी जाती थी। इस थिएटर की सुविधाओं की उपलब्धता होने पर निर्देशक श्री एल. एन. माथुर ने श्री डी एन राय लिखित ऐतिहासिक नाटक राखी का मंचन गंगा थियेटर में किया। यह नाटक अत्यधिक सफल रहा। इस नाटक के सफल मंचन से यह भी स्पष्ट हो गया कि यदि उपयुक्त मंच पर नाटक खेला जाए तो दर्शक भी उसे देखने के लिए लालायित रहते हैं। मार्च 1937 ईस्वी में जुबली फिल्मों के गंगा थियेटर में प्रदर्शन के लिए बी.पी.एस. फिल्म 26 ए नेपियर, सी रोड, बॉम्बे के साथ अनुबंध किया गया।[7] श्री गंगा थिएटर का निर्माण रंग कर्मियों के लिए उम्मीद जागृत करने वाला जरूर था किंतु राज्य सरकार की अर्थोपार्जन की नीति के कारण रंग कम को निरुत्साहित होना पड़ा। यद्यपि फिल्मों के प्रदर्शन के साथ–साथ नाटकों का मंचन भी गंगा थियेटर में होता रहा किंतु उसके लिए प्रशासनिक अनुमति प्राप्त करना अपने आप में एक दुरुह प्रक्रिया थी।

बीकानेर अभिलेखागार में मौजूद श्री गंगा थिएटर संबंधित दस्तावेजों का अध्ययन करने पर पाया कि थिएटर में रंगमंचीय प्रस्तुतियों पर मनोरंजन कर भी लगाया जाता था जिससे छूट प्राप्त करने के लिए गंगा थियेटर मैनेजर को समय–समय पर पत्र लिखे गए।

भारत कला मंदिर से जुड़े श्री दाऊ दयाल जोशी ने मैनेजर, गंगा थियेटर को 23 जुलाई 1946 को पत्र लिखा जिसमें उनकी संस्था 4 अगस्त और 11 अगस्त 1946 को आगा हश्र कश्मीरी लिखित असीरे हिर्स नाटक का गंगा थियेटर में मंचन करने की अनुमति चाह रही थी।[8] इस नाटक के मंचन से प्राप्त आय श्री विद्यार्थी सभा बीकानेर को दान की जानी थी जो समाज की शैक्षणिक स्थिति के उत्थान में प्रयुक्त होती। इस पत्र के प्रत्युत्तर में तत्कालीन गृह मंत्री बीकानेर श्री प्रताप सिंह जी ने बिना किसी शुल्क के नाटक मंचन की अनुमति प्रदान की, साथ ही नाटक के प्रदर्शन को मनोरंजन कर से भी मुक्त कर दिया। संबंधित फाइल में लगी पत्रावली से यह देखने को मिला कि प्रताप सिंह जी द्वारा दी गई अनुमति के संबंध में गंगा थिएटर के मैनेजर ने पत्र क्रमांक जी.टी.280 दिनांक 30.7.1946 में नाटक मंचन की दिनांक को 25.8.1946 करने का सुझाव रखा। इसका कारण यह था कि उसे समय गंगा थियेटर में तारामली फिल्म प्रदर्शित हो रही थी। साथ ही थिएटर में नए पर्दे लगाए जाने का काम भी होना था। भारत कला मंदिर विद्युत शुल्क के ₹15 भी जमा करवाए। मेमोरेंडम नंबर 67ध्पी.सी.बी.डी. दिनांक 10.8.1946 के द्वारा नाटक मंचन की अनुमति दी गई और प्रार्थी ने 25 अगस्त 1946 को अपने नाटक असीरे हिर्स का मंचन गंगा थियेटर में किया।

गंगा थियेटर संबंधित बस्ता नं. 19 की फाइल नं. 9 में प्राप्त पत्रावली संख्या 2053ध्पी.एस. दिनांक 26.12.1946 से प्राप्त जानकारी अनुसार गंगा थियेटर में 28.12.1946 को 9:30 बजे बंगाल–बिहार के सांप्रदायिक हिंसा पीड़ित शरणार्थियों की रिलीफ कमेटी की सहायतार्थ संगीत समारोह का आयोजन भी किया गया। इस समारोह में बीकानेर महाराजा और लालगढ़ पैलेस के अतिथि गण भी मौजूद रहे जिनमें एम यू मेमन निजी सचिव भी शामिल थे। इस समारोह में बीकानेर महाराजा और रॉयल फैमिली ने ₹2200 की मदद राशि रिलीफ कमेटी को प्रदान की व ₹1000 की अतिरिक्त राशि उचित एजेंसी को दी।[9]

न सिर्फ फिल्मों और थिएटर का मंचन गंगा थियेटर में होता था बल्कि कुश्ती दंगल जैसी अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां भी आयोजित की जाती थी। ऐसा ही एक जिक्र बस्ता नं. 19 की फाइल नं. 8 में पत्रावली से यह जानकारी मिलती है जिसमें पुराने मौरसी खातेदार कुतुबुद्दीन पुत्र श्री बादल खान ने कुश्ती दंगल आयोजित करने की मंजूरी की दरख्वास्त दी। इस कुश्ती दंगल से जुटाई राशि का 50 प्रतिशत युद्ध कोष में दिया जाना था। सरकार के जनरल सेक्रेटरी ने पत्र संख्या 476/जी.एस. दिनांक 11.12.1945 से सहायक राजस्व कमिश्नर, गंगानगर को इस संबंध में लिखा। उपलब्ध पत्रावली अनुसार इस कुश्ती मैच से 16040 रुपए की राशि संग्रहित हुई। इस अर्जित राशि में से 50 प्रतिशत युद्ध कोष में जमा करवाया गया।[10]

बीकानेर राज्य अभिलेखागार में प्राप्त पत्रावली स. CRR/8 दि. 31.11.1947 के माध्यम से श्रीमती हेमलता त्रिवेदी, अध्यक्षा, स्त्री विभाग, शरणार्थी समिति, बीकानेर ने प्रभारी मंत्री को पत्र लिखा, जिसमे शरणार्थियों की सहायतार्थ गंगा थिएटर में एक

फिल्म का शो अधिकृत करने की अनुमति मांगी। इस अपील पर जवाबी कारवाई करते हुए प्रचार विभाग की सेक्रेटरी, बीकानेर सरकार ने गंगा थिएटर के मैनेजर को पत्र लिखा जिसमे गृह व विकास मंत्री ने स्थानीय शरणार्थी समिति को गंगा थिएटर में फिल्म प्रदर्शन की अनुमति प्रदान की ताकि अर्जित आय से शरणार्थियों को मदद दी जा सके। साथ ही मनोरंजन कर से छूट भी प्रदान की गई। गंगा थियेटर में समय–समय पर मंचित नाटकों की एक सूची भी हमें इस फाइल से प्राप्त होती है, जिसके अनुसार प्रदर्शित नाटक है– चंद्रगुप्त, राखी, मंजरी, हसन, शूद्राज, दुविधा, दारा, मोरध्वज। राजस्थान से बाहर से भी पारसी मंडलिया आकर यहाँ नाटक किया करती थी। पृथ्वी थिएटर के अनेक शो जोधपुर, जयपुर और बीकानेर में आयोजित किये गए।[11] बॉलीवुड के मशहूर कलाकार और शौमैन पृथ्वीराज कपूर ने भी सिकंदर और दुश्मन जैसे नाटको को गंगा थिएटर बीकानेर में मंचित किया जिनमें उन्होंने स्वयं ने भूमिकाएं अभिनीत की। महाराजा गंगा सिंह जी द्वारा रंगमंच को बढ़ावा देने और जनता की सांस्कृतिक अभिरुचि को जागृत करने के लिए गंगा थिएटर का निर्माण इस कला से जुड़े कलावंतों और दर्शकों के लिए उत्साह जनक था किंतु 1937 में फिल्म प्रदर्शन के लिए थिएटर खोले जाने के बाद यहां नाटकों के प्रदर्शन में कमी कलावंतों को निरुत्साहित करने वाली रही। हाल ही में गंगा थियेटर बीकानेर यात्रा के दौरान गंगा थियेटर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान में शहर के मध्य प्रशासनिक भवनों यथा कलेक्ट्रेट के पास स्थित होने के बावजूद यह देखरेख के अभाव में वीरान हो बंद पड़ा है। भवन के सामने चाय की दुकानें खुली है। रखरखाव के अभाव में भवन भी जर्जर हालत में है।[12] यदि स्थानीय स्वायत्तशासी संस्थाएं प्रयास कर भवन की मरम्मत करवाएं और रंगमंचीय प्रस्तुतियों के लिए आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था कर पुनः मंच को संजीव करने का प्रयास करें तो बीकानेर की रंगमंचीय कला के पुनरुद्धार का सार्थक प्रयास संभव है।

गंगा थियेटर बीकानेर की रंगमंचीय कला के विकास में अहम भूमिका निभाने वाली पहल थी किंतु वहां नाटक प्रदर्शन की पूर्व अनुमति प्राप्ति के लिए की जाने वाली कागजी कारवाई समयग्राही, दुरुह और हतोत्साहित करने वाली थी। अनेक बार यह रंगमंच प्रदर्शन रिलीफ कार्यों और मदद राशि जुटाने के लिए किए जाते थे जिनकी मंजूरी प्राप्त करने की प्रशासकीय प्रक्रिया लंबी और विलंबकारी होती थी। राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर से प्राप्त गंगा थियेटर संबंधित फाइल में लगी पत्रावली में अनेक स्थानों पर गंगा थिएटर के मैनेजर को मंजूरी तथा मनोरंजन कर से मुक्ति की विशेष अनुमति हेतु बार–बार पत्र लिखे जाने का पता चलता है। लगभग एक दशक पहले अपने बीकानेर संभाग के दौरे के समय तत्कालीन राजस्थान के मुख्यमंत्री ने गंगा थियेटर पर लगे कोर्ट स्टे को हटवा इसे शहर की प्रमुख हेरिटेज बिल्डिंग के रूप में विकसित करने की घोषणा की थी।[13] किंतु एक दशक बाद अभी तक भी यह घोषणा कार्य रूप नहीं ले पाई यह विडम्बना ही है कि इतिहास की अनूठी यादों को समेटे इन हेरिटेज स्मारकों को सरकारी तंत्र की उदासीनता ने जर्जर खंडहरों में परिवर्तित कर दिया है। स्थानीय सरकार, रंगमंच से जुड़ी संस्थाओं और कलावंतो के सामूहिक प्रयासों से ही गंगा थिएटर को पुनर्जीवित करना संभव हो सकता है।

संदर्भ

1. जी.एच.ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 1940 ई, पृ. 8
2. डॉ. महेंद्र भाणावतए लोकनाट्य परंपरा और प्रवृतियाँए पृ.69
3. कुमारी रजनी जैन, बीकानेर का हिंदी रंगमंचः उद्भव और विकास, लघु शोध प्रबंध, 1982–83 पृ.48
4. वही पृ.49
5. वही पृ. 61
6. जी.एच.ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 1940 ई, पृ. 194
7. बस्ता नं. 19, फाइल संख्या 8, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर
8. बस्ता नं. 19, फाइल संख्या 576 पीसी.बी. दि. 29.7.1946 सेक्रेटरी ऑफ पब्लिसिटी, गवर्नमेंट ऑफ बीकानेर
9. बस्ता नं. 19 की फाइल नं. 9 में प्राप्त पत्रावली संख्या 2053/पी.एस. दिनांक 26.12.1946
10. बस्ता नं. 19 की फाइल नं. 9 पत्र संख्या 476/जी.एस. दिनांक 11.12.1945
11. स. डॉ. नवीन नंदवानाए समवेत शोध पत्रिकाए जनवरी–जून, 2022, 2321–6131
12. बीकानेर यात्रा के दौरान स्वयं लेखिका द्वारा देखा गया विवरण
13. दैनिक भास्कर २०१४